IJAER/Jan-Feb 2022/Volume-11/Issue-1 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

उच्च माध्यमिक स्तर पर सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन

Manju Bala

Assistant Professor

College Of Education, Iimt University Ganganagar Meerut

प्रस्तावना–

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में नींव के पत्थर राष्ट्र के गुणी एवं दक्ष शिक्षक होते हैं। शिक्षक एक ज्योतिपुत्र की तरह है जो स्वंय जलकर राष्ट्र को प्रकाशित करता है। यह छात्रों के ज्ञान चक्षु को आलोकित करता है, राष्ट्र का भविष्य उसके कन्धों पर टिका है। अध्यापक के विषय में कहा गया है– ''एक इन्जीनियर की त्रुटि से कुछ भवन या पुल टूट सकते है, एक डाक्टर की त्रुटि से कुछ मरीज मर सकते है, किन्तु एक शिक्षक की त्रुटि से सम्पूर्ण राष्ट्र की हानि होती है'' अर्थात अध्यापक व नक्षत्र है जो सम्पूर्ण मानव जाति का पथ पर्दर्शित करता है, शिक्षक का किसी भी राष्ट्र या समाज की उन्नति व अवनति में महत्वपूर्ण स्थान होता है।

शिक्षक राष्ट्र की शिक्षण व्यवस्था का सूत्रधार है। उसका कार्य बहुत पवित्र व उत्तरदायित्व पूर्ण है। अतः शिक्षक के सौहार्दपूर्ण, चरित्रवान, समयपाबन्ध, सकारात्मक दृष्टिकोण, शुद्ध व स्पष्ट वाचनशील, बुद्धिमान, विश्वसनीय, शैक्षिक उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्ध, धैर्यशील, सहानुभूतिपूर्ण, नैतिकशील आदि गुणों से परिपूर्ण होना चाहिए। आदर्श अध्यापक के गुणों का छात्रों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः उसका उद्देश्य बच्चों की आंतरिक प्रतिभा व व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करता है तथा उसे समाज एवं राष्ट्र की प्रगति में सहायक एवं कुशल नागरिक बनाना है। शिक्षक का दायित्व केवल पुस्तकीय ज्ञान देना नहीं है वरन् विद्यार्थी का चरित्र निर्माण, मानसिक व शारीरिक विकास करना भी है। शिक्षक एक निर्देशक के समान होता है उसके प्यार से ओतप्रोत वचन पूर्ण संतुष्टि प्रदान करते है। भारतीय संस्कृति में गुरू को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के समान माना गया है। लेकिन विषम

परिस्थितियों नें शिक्षक को व्यावासायिक बनने पर बाध्य किया है। परिणामतः प्रत्येक स्तर पर शिक्षक विहीन कक्षाएँ, शिक्षक–छात्र मतभेद एवं भाव असंतोष दृष्टिगोचर हो रहा है।

शिक्षण प्रक्रिया की समस्यायें और दुरूह तथा असहाय प्रतीत हो रही है। सर्वत्र बाल केन्द्रित शिक्षा, व्यक्तिगत शिक्षा, समाज शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, अनिवार्य शिक्षा के नारे तो बुलन्द हो रहे हैं किन्तु समुचित योजना, कुशल मार्ग–दर्शन तथा सफल उचित संसाधनों के अभाव में कोई प्रगति नहीं दिखायी पड़ रही है। छात्रों में अनुशासनहीनता बढ़ रही है। समाज से शिक्षकों की प्रतिष्ठा में निरन्तर कमीं और विद्यालयों की संख्या में बढोत्तरी हो रही है किन्तु अपेक्षानुरूप् गुणात्मक सफलता प्राप्त नहीं हो रही है। पाठ्यक्रम में पुस्तकीय ज्ञान का भण्डार है जिसका व्यवहारिक जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं है। यद्यपि शिक्षण विधियों की भरमार है किन्तु शिक्षक इन पर ध्यान नहीं दे रहे है। शिक्षा के क्षेत्र में आज हमारे पास अच्छे संसाधन उपलब्ध होने के बाद भी अपेक्षाकृत परिणाम नहीं मिल रहे है। हमने अपनी शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिये बहुत से मानवीय एवं भौतिक संसाधन, अंधाधुंध शिक्षण प्रशिक्षण अपनायें, लेकिन असफल रहे हैं। इन सबसे शिक्षा में नाममात्र के सुधार हुए है। भारत एक विकासशील देश है अतः शिक्षा के स्तरोन्नयन हेतु हमें शिक्षकों की गुणवत्ता पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

अध्यापकों को रचनात्मकता व शिक्षा के प्रति उनकी भावनात्मक जवाबदेही ही उनकी शिक्षा के लिए गुणवत्ता साबित कर सकती है। शिक्षकों की गुणवत्ता के लिये उनके चयन से ही हमें विशेष ध्यान देना होगा। चयन करते समय शिक्षक अभिवृत्ति वाले व्यक्ति को ही शिक्षक के रूप में चुना जाना चाहिए। इसके लिए विभिन्न प्रकार के परीक्षणों की आवश्यकता है। इसके बाद शिक्षकों के लिए कई प्रकार के सेवापूर्व एवं सेवारत प्रशिक्षणों की आवश्यकता है। सेवा पूर्व प्रशिक्षण में उनकी शिक्षा में अभिवृत्ति विकास के लिए कार्यक्रम होना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में अपेक्षाकृत परिणाम न मिलने की स्थिति में आवश्यकता है कि समाज, अभिभावक एवं प्रशासन को मिलकर शिक्षक की भूमिका तय करनी चाहिए। बालक के व्यक्तित्व का अधिकांश विकास अध्यापक व उसकी जिम्मेदारी पर निर्भर है। विद्यालय की सभी गतिविधियाँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षक से जुडी है।

शिक्षकों के उत्तरदायित्व पर विचार करने से निम्न प्रश्न उठाते है– ''अध्यापक किसके प्रति उत्तरदायी हो? किसलिये हो? उत्तरदायित्व किस प्रकार निश्चित और कार्यान्वित किया जाये? शिक्षा समाज

का एक अंग है, जो सामज की आवश्यकतानुसार शिक्षा का स्वरूप निर्धारित होता है। वर्तमान में शिक्षा प्रणाली तीन भागों में विभाजित है।

- प्राथमिक शिक्षा,
- माध्यमिक शिक्षा,
- उच्च शिक्षा।

माध्यमिक शिक्षा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की महत्वूर्ण कड़ी है।

समस्या कथन

शिक्षण का तात्पर्य शिक्षक, विद्यार्थी तथा पाठ्यक्रम के बीच एक प्रंशसनीय सम्बन्ध स्थापित करना है। इस सम्बन्ध के स्थापित होने से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होता है। दूसरे शब्दों में, अच्छे शिक्षण द्वारा विद्यार्थी को वांछनीय सूचनायें तो मिलती ही है, साथ ही उसे क्रियाशील रहते हुए स्वंय सीखने के अनुसार मिलते है। चूँकि अच्छा शिक्षण योजनाबद्ध होता है, इसलिये इसके द्वारा विद्यार्थियों को केवल चुनी हुई मुख्य–मुख्य बातों का ही ज्ञान दिया जाता है। अच्छा शिक्षण सहानुभूतिपूर्ण होता है तथा इसके अन्तर्गत शिक्षक तथा विद्यार्थी के सहयोग पर भी बल दिया जाता है। अतः अच्छा शिक्षण सीखने का एक ऐसा ढ़ग है जो जनतंत्र के रंग में रंग कर इतना प्रगतिशील हो जाता है कि विद्यार्थियों में संवेगात्मक स्थिरता उत्पन्न हो जाती है। इससे वे पेंचीदा से पेचीदा प्राकृतिक तथा सामाजिक वातावरण से अनुकूल करते हुए भावी जीवन के लिए तैयार हो जाते है। संक्षेप में अच्छा निदानात्मक तथा उपचारात्मक होते हुए शिक्षक, विद्यार्थी तथा पाठ्यक्रम के बीच एक ऐसा सम्बन्ध है जिसके द्वारा विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। इससे वह समाज का उत्तरदायी घटक तथा राष्ट्र का प्रखर चरित्र–सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत हो जाता है। शिक्षण द्वारा व्यक्ति तथा समाज दोनों ही उन्नति के शिखर पर चढ़ते रहते हैं।

उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय व निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन

शिक्षण के सही अर्थ हो समझने के लिए शिक्षण तथा अनुदेशन में अन्तर समझना परम आवश्यक है। शिक्षण के अन्तर्गत शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच पारस्परिक अन्तःप्रक्रिया (Personal Interaction) होती है जिसके परिणाम–स्वरूप विद्यार्थी उद्देश्य की ओर प्रभावित होते हैं। शिक्षण का प्रमुख तत्व शिक्षक तथा विद्यार्थियों का पारस्परिक तथा अन्तःप्रक्रिया है जो विद्यार्थियों को उद्देश्यों की ओर प्रभावित करता है।

आज के युग में शिक्षण को विज्ञान के रूप में पहचाना जाता है। शिक्षण को कला भी माना गया है। शिक्षण को विज्ञान इस आधार पर कहा जाने लगा कि शिक्षण की सभी क्रियाओं का निरीक्षण तथा विश्लेषण (Supervision and Analysis) किया जा सकता है। इस तथ्य के अतिरिक्त शिक्षक क्रियाओं का अध्ययन वस्तुनिष्ठ (Objective) ढ़ग से किया जा सकता है। संक्षिप्त रूप से हम कह सकते हैं कि शिक्षकों को हम विशेष प्रकार से प्रशिक्षण से तैयार कर सकते हैं। इन शिक्षक–प्रशिक्षण प्रक्रिया भी प्रयोगशाली सिद्ध हो सकती है। अतः शिक्षा को विज्ञान के रूप में भी जाना जाने लगा है।

शिक्षण के उद्देश्य

किसी अध्ययन के लिए सबसे महत्वपूर्ण आधार अनुसंधान के लिए निर्धारित उद्देश्य होते हैं। उद्देश्य ही अन्तिम लक्ष्य निर्धारित करते हैं और शोध की प्रक्रिया को संगठित और सही दिशा में अग्रसरित करते है। अतः शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध हेतु उद्देश्यों का निर्धारण इस प्रकार से किया है–

- सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत भाषा के शिक्षकों की कक्षा शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन।
- सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों की कक्षा शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन।
- सरकारी विद्यालयों में कार्यरत भाषा व सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों की कक्षा शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन।
- निजी विद्यालयों में कार्यरत भाषा व सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों की कक्षा शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध परिकल्पनायें

शोद्यार्थी ने प्रस्तावित लघु में अपने कार्य को पूर्ण करने के लिए उद्देश्यों के आधार पर परिकल्पना का निर्माण किया है। अर्थात शोध में उच्च माध्यमिक स्तर पर सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण को ज्ञात करने के लिए शोद्यार्थी द्वारा शून्य परिकल्पना द्वारा शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है, गया इस प्रकार है–

- सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत भाषा के शिक्षकों की कक्षा शिक्षण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों की कक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सरकारी विद्यालयों में कार्यरत भाषा, सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों की कक्षा शिक्षण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- निजी विद्यालयों में कार्यरत भाषा व सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों की कक्षा शिक्षण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तावित शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की व्याख्या

सरकारी विद्यालय– राज्य सरकार द्वारा संचालित छात्र व छात्राओं के विद्यालयों जहां राज्य सरकार का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप होता है।

निजी विद्यालय–निजी विद्यालय निजी संस्थाओं या सदस्यों द्वारा संचालित विद्यालय जिन पर राज्य या केन्द्र सरकार का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं होता है।

शिक्षण–शिक्षण शिक्षक एवं विद्यालयों का पारस्परिक सम्बन्ध अथवा अन्तः प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों के उद्देश्यों की ओर प्रभावित करती है।

उच्च माध्यमिक स्तर–उच्च माध्यमिक स्तर से तात्पर्य उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से है।

सीमांकन–

किसी भी शोध कार्य की पूर्ति एक निश्चित सीमा के अन्दर ही आवश्यक है। शोद्यार्थी ने शोध कार्य की पूर्ति एक निश्चित सीमा के अन्दर निम्न बिन्दुओं पर की है–

- प्रस्तुत शोधकार्य मेरठ जिले के माध्यमिक स्तर पर सरकारी व निजी विद्यालय तक सीमित किया गया है।
- इस शोध में माध्यमिक स्तर पर सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत भाषा व सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।
- इस शोध में माध्यमिक स्तर पर सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत, भाषा व सामाजिक अध्ययन के 10–10 शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

सर्वेक्षण विधि के प्रकारः–

- विवरणात्मक सर्वेक्षण
- विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण
- विद्यालय सर्वेक्षण
- समाजिक सर्वेक्षण
- आदर्शमूलक सर्वेक्षण या तुलनात्मक विधि

तुलनात्मक विधि–

इस विधि द्वारा हम दो वर्गो या समूहों का अध्ययन करते हैं। इसके साथ–साथ उनकी विशेषताओं जैसे पारस्परिक समानतायें तथा विभिन्नतायें भी ज्ञात की जाती है। उन दोनों वर्गो या समूहों के प्राप्त परिणामों के आधार पर ही उन दोनों समूहों में अन्तर ज्ञात किया जाता है।

जनसंख्या का न्यादर्श–

जनसंख्या इकाइयों के समुच्चय को, जिसके लिये चर का मान निकालना अभिष्ट है, जनसंख्या कहते है। प्रत्येक शोध कार्य के लिये जनसंख्या का निर्धारण आवश्यक है। इसी जनसंख्या के सर्वेक्षण से तथ्य व प्रदत्तो का संकलन किया जाता है। किसी भी अनुसंधानकर्ता के लिये पूरे समाज में सभी व्यक्तियों का अध्ययन करना संभव नहीं है केवल थोडे से ही व्यक्तियों को ही लिया जाता है जो सभी का प्रतिनिधित्व कर सकें। जिस पर किये गये अध्ययन के आधार पर समय के लिये निष्कर्ष निकाला जा सके। इस प्रकार न्यादर्श समग्र में चुने हुये कुछ वस्तुओं या वस्तुओं के संग्रह का समूह होते हुये भी समग्र के सभी गुणों का समावेश करता है।

न्यादर्श का चयन

तालिका–1

विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक न्यादर्श (20)

सरकारी विद्यालय से (10)		गैर सरकारी विद्यालय से (10)	
भाषा के शिक्षक (5)	सा0अ0 के शिक्षक (5)	भाषा के शिक्षक (5)	सा0अ0 के शिक्षक (5)

तालिका–2

विभिन्न विद्यालयों से चयनित सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों तालिका

क्र.स.	सरकारी विद्यालय	शिक्षक	क्र.स.	सरकारी विद्यालय	शिक्षक
1	श्री विद्या मन्दिर इण्टर कॉलिज, मेरठ	3	1	सरूरपुर इन्टर कॉलिज, मेरठ	2

प्रश्नावली का अंतिम प्रारूप तैयार करना–

''शिक्षक जवाबदेही मापनी'' में कथनों के विशेषज्ञों की राय के अनुसार नियोजित क्रम में लिखा गया। मापनी के कथन विभिन्न आयामों पर लिपिबद्ध किये गये। भाषागत त्रुटियों का निवारण करने के लिये हिन्दी भाषा के आचार्य को परीक्षण जांच के लिये दिया गया। इस प्रकार कुल 50 कथन अंकित प्रारूप लिये तैयार किये गये हैं। जिसमें शिक्षकों को अपने विचार 3 बिन्दुओं के पैमाने पर देने होंगे। प्रत्येक कथन के उत्तर के लिये 3 श्रेणी निर्धारित की गयी है–

1 सहमत 2. तटस्थ 3. असहमत

इनमें सहमत के लिये 2 अंक, तटस्थ के लिये 1 अंक असहमत के लिए 0 अंक देने का प्रावधान किया गया है। इस प्रकार सभी कथनों की गणना के पश्चात् सभी अंक को आपस में जोड़ दिया गया। कुल प्राप्तांक के आधार पर शिक्षक की जवाबदेही को मापा गया। आंकड़ो के एकत्रीकरण के लिये शोद्यार्थी द्वारा बागपत जिले, के विभिन्न विद्यालयों में स्वनिर्मित परीक्षण का प्रशासन कर आंकड़े एकत्र किये गये।

तालिका–3

शिक्षक जवाबदेही मापनी पर प्राप्त आंकड़ों का विवरण

क्र. स.	विद्यालय का नाम	शिक्षक संख्या मध्यमान	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
1	सरकारी विद्यालय के भाषा के शिक्षक	5	50	35.68	5.05
2	निजी विद्यालय के भाषा के शिक्षक	5	50	35.44	5.35
3	सरकारी विद्यालय के सामाजिक अध्ययन के शिक्षक	5	50	36.36	4.57
4	निजी विद्यालय के	5	50	35.52	5.18

	सामाजिक अध्ययन के शिक्षक				

उपकल्पना–1

सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तलिका–5

(उच्च माध्यमिक स्तर पर सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति आंकड़ों की विश्लेषण तालिका)

क्र. स.	विद्यालय का नाम	शिक्षक संख्या मध्यमान	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
	सरकारी विद्यालय	5	50	35.44	5.35
	निजी विद्यालय	5	50	35.44	5.35

टी प्राप्त मान 0.925 दोनों सार्थकता इस तर्क से कम है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त नहीं होती है। इसलिए मध्यमानों का अन्तर सार्थक नहीं है।

उपकल्पना–2

सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यारत भाषा के शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तलिका–6

(उच्च माध्यमिक स्तर पर सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति आंकड़ो की विश्लेषण तालिका)

क्र. स.	विद्यालय का नाम	शिक्षक संख्या मध्यमान	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
	सरकारी विद्यालय	5	50	35.68	4.57
	निजी विद्यालय	5	50	35.52	5.15

टी प्राप्त मान 0.156 दोनों सार्थकता इस तर्क से कम है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त नहीं होती है। इसलिए मध्यमानों का अन्तर सार्थक नहीं है।

उपकल्पना–3

सरकारी विद्यालयों के भाषा व सामाजिक अध्ययन के शिक्षकां की कक्षा शिक्षण के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तलिका–7

(उच्च माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत भाषा व सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति आंकड़ों की विश्लेषण तालिका)

क्र. स.	विद्यालय का नाम	शिक्षक संख्या मध्यमान	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
	सरकारी विद्यालय	5	50	35.68	5.05
	निजी विद्यालय	5	50	35.44	5.35

टी समूह का मान 0.230 तालिका के दोनों सार्थकता स्तर से कम है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त नहीं होती है। इसलिए मध्यमानों का अन्तर सार्थक नहीं है।

उपकल्पना–4

निजी विद्यालयों के भाषा व सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तलिका–6

(उच्च विद्यालय स्तर पर निजी विद्यालयों में कार्यरत भाषा व सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति आंकड़ों की विश्लेषण तालिका)

क्र. स.	विद्यालय का नाम	शिक्षक संख्या मध्यमान	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
	सरकारी विद्यालय	5	50	35.52	5.16
	निजी विद्यालय	5	50	35.44	4.57

टी समूह का मान .858 तालिका के दोनों सार्थकता स्तर से कम है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त नहीं होती है। इसलिए मध्यमानों का अन्तर सार्थक नहीं है।

निष्कर्ष के अन्तर्गत शोध की विश्लेषित सामग्री को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिसमें सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत 20 शिक्षकों का जिसमें सरकारी के 10 व निजी विद्यालयों के 10 शिक्षक लिए गए है। जिनका 100–100 विद्यार्थियों द्वारा तुलनात्मक अध्ययन किया है। उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकारी व निजी विद्यालयों के सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों की कक्षा शिक्षण में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। सरकारी व निजी विद्यालयों में भाषा के शिक्षकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है इसका कारण सरकारी व निजी विद्यालयों के शिक्षकों की भाषा शिक्षण के प्रति सजगता हो सकता है और भाषा के प्रति रूचि हो सकती है। सरकारी शिक्षकों में विषय भेद के आधार पर कक्षा शिक्षण में अन्तर नहीं पाया गया है। जिसका कारण सामान वेतन व सभी सामान सुविधाएं हो सकता है। निजी विद्यालयों में विषय भेद के आधार पर कक्षा शिक्षण के प्रति अन्तर नहीं पाया गया इसका कारण निजी विद्यालयों का कक्षा वातावरण चरन प्रक्रिया, शिक्षकों की नौकरी जाने का खतरा एकीकृत विद्यालय संगठन व पर्याप्त सुविधाओं का होना हो सकता है। सरकार को समय–समय पर कक्षा शिक्षण को सुधारने के लिए शिक्षकों की वेतन सम्बन्धी व वातावरण सम्बन्धी सुविधाओं की समस्या को दूर किये जाने का प्रयास करना चाहिए।

निष्कर्ष–

यह लधुशोध प्रबन्ध शिक्षकों के लिए आत्मप्रेरणा का स्त्रोत सिद्ध हो सकता है कि किस प्रकार से उन्हें शैक्षिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करना है। स्वंय को शिक्षण में तल्लीन करके पूरी क्षमता से छात्रों की समस्याओं का निराकरण करना है। अपने ज्ञान के असीम भण्डार में निरन्तर नवीन ज्ञान जोड़ने का प्रयास करता है। प्रत्येक परिस्थिति में अपनें छात्रों के शिक्षण के प्रति निष्ठापूर्ण दायित्व का वहन करता है। शिक्षक को शिक्षण के प्रति अगाध श्रद्धा से स्वंय को समर्पित करना है। तभी शिक्षक समाज राज्य व कक्षा शिक्षण के प्रति स्वंय को सिद्ध कर पायेगें।

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में नींव के पत्थर राष्ट्र के गुणी एवं दक्ष शिक्षक होते है। शिक्षक एक ज्योतिपुंज की तरह है जो स्वंय जलकर राष्ट्र को प्रकाशित करता है। अध्यापक के विषय में कहा गया है– ''एक इन्जीनियर की त्रुटि से कुछ भवन या पुल टूट सकते है, एक डॉक्टर की त्रुटि से कुछ मरीज मर सकते है, किन्तु एक शिक्षक की त्रुटि से सम्पूर्ण राष्ट्र या समाज की उन्नति व अवनति में महत्वपूर्ण स्थान होता है।

शिक्षक राष्ट्र की शिक्षण व्यवस्था का सूत्रधार है। उसका कार्य बहुत पवित्र व उत्तरदायित्व पूर्ण है। आदर्श अध्यापक के गुणों का छात्रों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः उसका उद्देश्य बच्चों की समस्त आंतरिक प्रतिभा व व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है तथा उसे समाज एवं राष्ट्र की प्रगति में सहायक एवं कुशल नागरिक बनाना है। शिक्षक एक दिशा निर्देशक के समान होता है उसके प्यार से ओतप्रोत वचन पूर्ण संतुष्टि प्रदान करते हैं। भारतीय संस्कृति में गुरू को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के समान माना गया है। लेकिन विषम परिस्थितियों ने शिक्षक को व्यवसायिक बनने पर बाध्य किया है। परिणामतः प्रत्येक स्तर पर शिक्षक विहीन कक्षाएँ, शिक्षक–छात्र मतभेद एवं छात्र असंतोष दृ ष्टिगोचर हो रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीं

- बुच0 एम0 वी0 सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन सीएएसई, एमएसयू, सोसायटी ऑफ एजूकेशन रिसर्च एण्ड डवलपमेण्ट, बड़ौदा, 1979
- केमे इनथ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एन.सी.ई. आ.टी., न्यू दिल्ली, 1992
- डोन्डियाल, एस.एन. शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र, जयपुर, 1994
- गिलफोर्ड, जे.पी. साइकोमैट्रिक मेथर्ड, मेंक ग्राहिल बुक कम्पनी, बैंगलोर, 1973
- 5.मेरिट, हेनरी ई शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यकी का प्रयोग, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना, 1999